द्वितीय अध्याय

संबंधित साहित्य का अध्ययन

2.1 प्रस्तावना

साहित्य की समीक्षा के अंतर्गत हम अपने शोध विषय से संबंधित पहले से मौजूद किसी साहित्य या शोध पत्रिका का अध्ययन करते है। इसके अंतर्गत हम इस बात का अध्ययन करते है कि हमारे द्वारा चुने गए क्षेत्र में कितना काम हो चुका है एवं किस प्रकार का काम हुआ है, अभी शोध का नया ट्रेड क्या है।

सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन अनुसंधान की नींव है जिस पर अनुसंधान का विशाल भवन निर्मित होता है व्यक्ति सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से ही अपने अनुसधान का आधार प्राप्त करता है। वास्तव में शोध समस्या के मूल तक पहुँचने के लिए सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन करना आवश्यक है। सम्बन्धित सहित्य उन सभी प्रकार की पुस्तकों, ज्ञान कोशों, पत्र–पत्रिकाओं में प्रकाशित तथा अप्रकाशित शोध प्रबधों एवं अभिलेखों आदि में है। जिनके अध्ययन से अनुसंधानकर्ता को अपनी समस्या की परिकलपनाओं के निर्माण करने मे, अध्ययन की रूपरेखा बनाने एवं कार्य को आगे बढाने में सहायता प्राप्त होती है।

2.2 सम्बन्धित साहित्य का अर्थ व परिभाषाएँ

अनुसंधान के क्षेत्र में सम्बन्धित साहित्य एक प्रथक एवं महत्वपूर्ण इकाई है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से शोधकर्त्री को पूर्व मे हुए शोध कार्यो एवं दशाओं तथा भावी शोधकार्यो की संभावनाओ का ज्ञान भी होता है। यह शोधकर्त्री को सही दिशा निर्देशन देने के साथ–साथ पुनरावर्ति से भी रोकता है।

सम्पूर्ण मानव ज्ञान पुस्तकों तथा पुस्तकालयो मे सुरक्षित रहता है। अन्य जीवधारियों से भिन्न जो प्रत्येक नई पीढियों के साथ पुनः नये सिरे से कार्य प्राम्भ करते है मनुष्य अतीत के संचित व अधोलिखित ज्ञान के आधार पर नवीन ज्ञान सृजन करता है।

किसी क्षेत्र की समस्याओं तथा तथ्यों से सुपरिचित होने के लिए विषय से सम्बन्धित होने के लिए उस विषय से सम्बन्धित साहित्य को पढना होता है।

जे. एफ रमल के अनुसार, श्शनियमानुसार कोई भी शोध नहीं हो सकता, जब तक की उस शोध से सम्बन्धित साहित्य का लिखित विवरण प्रस्तुत अध्ययन में न दिया गया हो।श्श

2.3 सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन का महत्व

- वास्तविक तथ्यों की सूचनाओं का ज्ञान।
- पुनरावृति से बचना।
- सभी प्रकार के विज्ञानों शास्त्रों में अध्ययन का आधार।
- अध्ययन की रूप रेखा तैयार करने में सहायक।
- पूर्व में किये गये आँकड़े वर्तमान अध्ययन में सहायक।
- पूर्व की गलतियों से बचना।
- समय की बचत में सहायक।

2.4 सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के उद्देश्य

- समस्या के निर्माण हेतु यह महत्वपुर्ण साधन होता है।
- अनुसंधान कर्ता के ज्ञान कोश की अभिवृद्धि हेतु।
- अनुसंधान की उचित विधि के चयन हेतु आवश्यक
- अध्ययन की परिकल्पनाओं, आंकड़ों का संकलन व सारणीयन करना।

- तुलनात्मक आंकडों को प्राप्त करने व विश्लेषण में सहायक।
- यह परिणामों के विश्लेषण में सहायक होता है।

2.5 सम्बन्धित साहित्य की सूचनाओं के स्त्रोत

सम्बन्धित साहित्य की सूचना प्राप्त करने हेतु पुस्तकालय सर्वाधिक महत्वपूर्ण स्त्रोत है। पुस्तकालय के साथ–साथ अन्य साधनों से भी परिचित होना आवश्यक है।किसी भी शोध के क्षेत्र मे विद्यमान सूचनाओं के स्त्रोत मुख्यतः दो प्रकार के होते है।

1- प्रत्यक्ष **2- अप्रत्यक्ष**

इन्हें प्राथमिक स्त्रोत और द्वितीय स्रोत भी कह सकते है। प्राथमिक स्त्रोत पाठ्य पुस्तकें, विश्वकोष तथा अन्य लेख है जो लोगों द्वारा लिखे गये है।

पी. वी. यंग ने सूचनाओं के स्त्रोतों को दो भागों में विभक्त किया है–

1- लिखित **2- सकंलित**

उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रखते हुए अनुसंधानकर्त्री ने निम्न समस्या से सम्बन्धित चरों के साहित्य का अध्ययन किया जो निम्न प्रकार वर्णित है।

श्श्माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों की शिक्षक–प्रभावशीलता का मानसिक स्वास्थ्य, कार्य संतुष्टि एवं कार्य अभिप्रेरणा से सम्बन्ध का अध्ययनश्श

सामान्यतः सब इस बात से सहमत है कि किसी शैक्षिक प्रणाली की गुणवता उसका ऐसा क्षेत्र है जो शिक्षकों की गुणवता पर निर्भर करता है। एक स्कूल में उत्कृष्ट भौतिक ससांधन जैसे उपकरण, बिल्डिंग, लाइब्रेरी व अन्य सुविद्यायें तथा समुदाय

की आवश्यकतानुसार पाठ्यक्रम उपलब्ध हो सकता है। किन्तु अगर शिक्षक अनुपयुक्त एवं अपनी जिम्मेदारी के प्रति उदासीन हो तो पूरे कार्यक्रम के अप्रभावी और व्यर्थ होने की संभावना है। अतः समस्या प्रभावी शिक्षकों के पहचान की है। वांछनीय शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए, साकार करने के लिए सभावित कारकों पर अध्ययन के अनेक प्रयास किए गए है जो सामान्य रूप से शिक्षक प्रभावशीलता से जुड़े हुए है। और लगातार अनुसंधान प्रयास उन चरों को समझने के लिए किये जा रहे है जो शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित करते है। शिक्षक प्रभावशीलता पर सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से पता चलता है कि कोई ऐसा एक मात्र कारक नही है जो कि शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित करते है।

शिक्षकों का मानसिक स्वास्थ्य, कार्य संतुष्टि एवं कार्य अभिप्रेरणा ऐसे महत्वपूर्ण कारक है जो शिक्षक प्रभावशीलता को प्रभावित करते है। कार्य संतुष्टि शिक्षक के प्रदर्शन के साथ–साथ उसकी प्रभावशीलता को बढाता है। आज स्कूलों के सामने सबसे बड़ी चुनौती यह है कि कैसे उन शिक्षकों के कार्य दबाब का प्रबंधन करे जो कार्य स्थल के वातावरण से असंतुष्ट है। अतः यह अनुसधान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र है कि कैसे स्कूल शिक्षकों के प्रदर्शन में सुधार किया जाये। कई बार यह भी देखा गया है कि जो शिक्षक अपनी नौकरी से संतुष्ट है। वे भी अच्छे से कार्य नहीं कर रहे है। यह उनके व्यवसाय/पेशे में प्रेरणा एवं प्रतिबद्वता की कमी के कारण हो सकता है।

2.6 सम्बंधित साहित्य समीक्षा का प्रस्तुतीकरण

प्रस्तुत अध्याय के लिए शोधार्थी ने शोध समस्या के विभिन्न चरों से सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किया। जो निम्न प्रकार से प्रस्तुत किया है–

सम्बंधित साहित्य को दो भागों में विभाजित किया गया है

- **भारत में हुए शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन**
- **विदेशों में हुए शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन**

भारत में हुए शोध से सम्बन्धित साहित्य का अध्ययन

मीना, सावित्री देवी (2023) के शोध कार्य का मुख्य उद्देश्य दक्षिणी राजस्थान में उच्च शिक्षा में अध्ययनरत् जनजातीय बालिकाओं की वर्तमान स्थिति, समस्याओं एवं भविष्य में अवसरों का अध्ययन करना है। इस उद्देश्य की प्राप्ति के लिए दत्त संकलन हेतु उपकरणों के रूप में प्राचार्यों, व्याख्याताओं तथा अभिभावकों के लिए साक्षात्कार अनुसूची का प्रयोग किया गया जबकि बालिकाओं के लिए एक व्यक्तिगत सूचना पत्रक तथा स्वयं शोधार्थी के लिए एक अवलोकन सूची का प्रयोग किया गया है। प्रस्तुत शोध सर्वेक्षण विधि के अन्तर्गत सम्पादित किया गया है जिसमें कुल 376 अभिधारकों के न्यादर्श समूह (320 बालिकाएँ, 8 प्राचार्य 16 व्याखरता एवं 32 अभिभावक) पर इस उपकरण का प्रशासन किया गया। अध्ययन के निष्कर्ष यह बताते हैं कि वर्तमान स्थिति के प्रत्येक पहलू यथा– शैक्षिक, पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में शहरी जनजातीय बालिकाओं की स्थिति ग्रामीण जनजातीय बालिकाओं की तुलना में सुदृढ पाई गई है। जहाँ तक समस्याओं का प्रश्न है शहरी क्षेत्रों में ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बेहतर सामाजिक, आर्थिक एवं शैक्षिक वातावरण पाया जाता है जिसके कारण शहरी जनजातीय बालिकाओं की पारिवारिक, सामाजिक एवं आर्थिक समस्याएँ इतना

विकराल रूप धारण नहीं कर पाती हैं। भविष्य में अवसरों के संदर्भ में शहरी क्षेत्रों की स्थिति ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में बेहतर प्राप्त हुई है। दूसरे शब्दों में, ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना में शहरी क्षेत्रों में जनजातीय बालिकाओं के लिए भविष्य में अधिक अवसर विद्यमान हैं। अन्य अभिधारक जैसे प्राचार्य, व्याख्याता एवं अभिभावक इत्यादि भी जनजातीय बालिकाओं के भविष्य को लेकर आशावान है।

ज्योति बाला (2022) ने अपने शोध पत्र में आदिवासी तथा गैर आदिवासी शिक्षकों के जीवन कौशल का अध्ययन किया। इसके लिए सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत उदयपुर जिले के 400 आदिवासी तथा 400 गैर आदिवासी शिक्षकों का चयन न्यादर्श के तौर पर किया गया। इनके जीवन कौशल से सम्बंधित दत्तों का संकलन करने के लिए पाँच विकल्प आधारित अभिमतावली का निर्माण किया गया। शोध निष्क्रयों में आदिवासी शिक्षकों की भांति गैर–आदिवासी शिक्षकों का जीवन कौशल भी समग्र क्षेत्रों में उच्च पाया गया है। तुलनात्मक दृष्टि से गैर–आदिवासी शिक्षको का जीवन कौशल अधिक उच्च पाया गया है।

अमित कुमार (2022) ने अपने शोध पत्र में आदिवासी तथा गैर आदिवासी शिक्षकों की अध्यापन दक्षता का अध्ययन किया। इसके लिए सर्वेक्षण विधि के अंतर्गत उदयपुर जिले के 400 आदिवासी तथा 400 गैर आदिवासी शिक्षकों का चयन न्यादर्श के तौर पर किया गया। इनके जीवन कौशल से सम्बंधित दत्तों का संकलन करने के लिए तीन विकल्प आधारित अभिमतावली का निर्माण किया गया। शोध निष्कषों में आदिवासी शिक्षकों की भांति गैर–आदिवासी शिक्षकों की अध्यापन दक्षता भी समग्र क्षेत्रों में उच्च

पाई गई है। तुलनात्मक दृष्टि से आदिवासी तथा गैर–आदिवासी शिक्षको की अध्यापन दक्षता में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया है।

बानोथु, डॉ. बोंद्यालु (2021) ने आदिवासी समाज और आधुनिक शिक्षा हिडिम्ब के सन्दर्भ में विषयक शोध अध्ययन किया। इस शोध निष्कर्ष में पाया गया कि आदिवासियों के सम्पूर्ण विकास के लिए, संविधान में कई तरह के प्रावधान दिए गये हैं। सरकार आदिवासियों के लिए एक रूपया देती हैं तो, उसमें नब्बे प्रतिशत, बीच के दलाल खा जाते हैं। आदिवासियों के पास मात्र दस प्रतिशत पहुँचता है, ऐसे में आदिवासियों का विकास कहाँ से होगा। आदिवासी युवक तमाम संघषों के बावजूद, उच्च शिक्षा, पीएच. डी. कर लेते हैं, फिर भी नौकरी नहीं मिलती है। आदिवासियों के स्थान पर गैर आदिवासियों को भर्ती किया गया है। अगर इसी प्रकार आदिवासियों का शोषण होता रहा तो आदिवासियों का विकास कैसे सम्भव है। आदिवासियों को हर अन्याय के विरोध में संघर्ष करना होगा।

मीणा, मनीराम (2021) ने राजस्थान के जनजातीय समाज में ऋणग्रस्ता के कारणों का अध्ययन किया। इन्होंने शोध के निष्कर्ष में पाया कि राजस्थान की जनजातीय समाज अज्ञानता, अन्धविश्वासी, होने के कारण आज भी सभ्यता से दूर हैं। जनजातीय समाज सामाजिक कुरीतियों जैसे मृत्यु, दहेज, त्यौहार और मेले पर आय से ज्यादा खर्च कर देता हैं शराब भी पीते हैं तथा कृषि के लिए भी कर्ज लेते हैं जो एक बार लिया गया कर्ज चूकता नहीं और वह ऋणी ही होता चला जाता है। ऋण में ही जन्म लेता है

और ऋण में ही मर जाता है। अपनी आय का सही उपयोग नहीं करने के कारण जनजातीय समाज ऋण में ही डूबा रहता है।

जैन, अनिलकुमार, सिंह, रजनीरंजन (2020) ने सीमान्त वर्ग की बालिकाओं के शैक्षिक सशक्तिकरण में कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय की भूमिका का मूल्यांकन किया। इस अध्ययन के उद्देश्य के.जी.बी.वी. ब्लॉक बडागांव डायट बरुआसागर, झांसी में अध्ययनरत बालिकाओं के नामांकन ठराव की स्थिति, शिक्षण अधिगम प्रक्रिया का अध्ययन करना एवं बालिकाओं के शैक्षिक और आन्तरिक बाह्य विकास का अध्ययन करना था। शोध निष्कर्ष में इन्होंने पाया कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति, अल्पसंख्यक व गरीबी की रेखा के नीचे रहने वाली सीमांत वर्ग की लडकियाँ जो हाशिये पर धकेल दी गयी थी। विद्यालय में इनके मानसिक विकास के साथ साथ उनके आन्तरिक बाहरी विकास पर भी बल दिया जा रहा है जिससे उनके शैक्षिक सशक्तिकरण में वृद्धि हुई है तथा बालिका साक्षरता का स्तर बढ़ा है।

धाभाई, सीमा (2020) ने आदिवासी आवासीय विद्यालयों के शिक्षा के स्तर का विवेचन किया। इन्होंने इस शोध अध्ययन में पाया कि उदयपुर जिले के आदिवासी विद्यालय के तीनों शाखा (कोटड़ा, खेरवाड़ा, सलुम्बर) में छात्र–छात्राओं को उनके शिक्षा के स्तर के निर्धारत कारकों में से तहसील एवं जिला मुख्यालय की दूरी, परिवहन साधनों की उपलब्धता, अध्ययन क्षेत्र में अवस्थित आदिवासी की संख्या के निर्भर चर का आवासीय विद्यालयों की छात्रों की संख्या पर विपरीत प्रभाव पाया गया है। आदिवासी विद्यालयों की छात्रों की संख्या एवं शिक्षा के स्तर पर जनसंख्या एवं जाति वर्ग, चिकित्सा

सुविधाओं, आध्ययन क्षेत्र में संचालित शैक्षणिक गतिविधियां, अध्ययन क्षेत्र का स्टाफ, पुस्तकालय एवं प्रयोगशाला के स्तर पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता हैं जो कि मुख्य रूप से विद्यार्थियों के शिक्षा के स्तर को प्रभावित करता है।

भारद्वाज, मधुकुमार (2019) ने सहरिया जनजाति तथा विस्थापित बांग्लादेशी माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पर शोध कार्य किया इस शोध कार्य का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के सहरिया जनजाति व विस्थापित बांग्लादेशी छात्र–छात्राओं के सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन करना था। इस अध्ययन में राजस्थान के हाडौती के बारों जिले की किशनगंज एवं शाहबाज तहसील के 600 विद्यार्थियों का चयन किया। इस शोध के निष्कर्ष में पाया कि सहरिया जनजाति व बंगाली छार–छात्राओं की सामाजिक–आर्थिक स्तर का उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर सार्थक प्रभाव पड़ता है।

अहारी, रमेश चन्द्र (2019) ने जनजातीय महिला स्वास्थ्य के सांस्कृतिक आयाम विषयक शोध कार्य किया। इस शोध निष्कर्ष में इन्होंने पाया कि जनजातीयमहिलाओं में स्वच्छता एवं स्वास्थ्य की आदतों का परम्परागत होना अधिक प्रतिशत में है, शौचालय प्रयोग एवं शौच के बाद साबुन से हाथ धोने के व्यवहार अपेक्षाकृत कम है, अस्वच्छ से ज्यादा जादू–टोने को बिमारी का कारण मानना यह स्पष्ट करता है कि स्वच्छता रखने से बेहतर स्वास्थ्य की प्रर्याप्त जानकारी दृष्टिकोण एवं व्यवहार परिवर्तन की आवश्कता है।

यादव, शरद कुमार (2019) ने भारत में जनजाति समुदाय के लिए शिक्षा और विकास की नीतियां विषयक शोध अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन के परिणामस्वरूप इन्होंने

पाया कि अनुसूचित जनजाति समुदाय में शिक्षा की स्थिति बहुत दयनीय अवस्था में है, आदिवासी बच्चों को प्राथमिक शिक्षा उनकी मातृभाषा में देने की जरूरत है, शिक्षक आदिवासी भाषा को ठीक से नहीं समझने के कारण उनके बीच सही तरीके से समायोजन नहीं कर पाते हैं। आदिवासियों की शिक्षा का स्वरूप उनके समाज की पृष्ठभूमि पर केन्द्रित हो। अनुसूचित जनजाति वर्ग में शिक्षा के प्रति रुझान तभी बढ़ सकता है जब शिक्षा का स्वरूप जनजाति समाज की पृष्ठभूमि को केन्द्र में रखकर पाठ्यक्रम का निर्माण हो। साथ ही इन क्षेत्रों में वंचित बचों के लिखने पढ़ने और सिखने का आनन्दप्रद अनुभव बनाया जाये, दूर–दराज के जनजातियं क्षेत्रों के स्कूलों में दूरदर्शन फिल्मों आदि के जरिये दूरस्थ शिक्षा पद्धति की सहायता भी करने की जरूरत है।

राजपूत, उदयसिंह (2018) ने मध्यप्रदेश में जनजातीय विकास प्रयास, बाधाएँ एवं सुझाव विषयक शोध अध्ययन किया। शोधकर्ता ने अपने अध्ययन के निष्कर्ष में पाया की आदिवासी विकास का अर्थ ऊपर से योजना बना कर लागू करना नहीं है वरन आदिवासियों को स्वयं अपने विकास के लिए योजना बनाने योग्य बनाना होगा। आदिवासी विकास की सम्पूर्ण धारणाओं में बदलाव लाना बहुत जरूरी हैं। गरीबी, बेरोजगारी दूर करने के लिए कार्यक्रमों तथा स्वास्थ्य शिक्षा एवं मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति के साथ लोकतांत्रिक समाज की मूल धारणा को लोगों के बीच पहुँचाना परम आवश्यक है।

पारगी, लोकेश (2017) ने जनजातीय विकास में गैर–सरकारी संगठनों की भूमिका विषयक शोध अध्ययन किया और पाया कि जनजातीय विकास के पंचशील सिद्धांन्त

विकास के स्थायी एवं मार्गदर्शी सिद्धान्त है और आज ही जनजातीय विकास योजनाओं को लागू करने में एवं लोगों तक पहुँचाने में गैर–सरकारी संगठनों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। ये संगठन सरकार की विभिन्न योजनाओं को ग्रामीण क्षेत्रों में जनजाति एवंअधिकारों के प्रति निःस्वार्थ भाव से सामाजिक भावना से कार्य करते हैं इसलिए जनजातिय विकास में गैर–सरकारी संगठनो की महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

शर्मा, निर्मला (2017) के शोध का मुख्य उद्देश्य महाविद्यालयी अनुसूचित जनजाति के विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति, सामाजिक मान्यताओं एवं समस्याओं काअध्ययन करना है। इसके लिए बांदा जनपद के अनुसूचित जनजाति के स्नातक एवं स्नातकोत्तर कक्षाओं में अध्ययनरत् 400 छात्र–छात्राओं को दैव निदर्शन के माध्यम से सूचनाप्रदाता के रूप में चुना गया। अध्ययन के निमित्त प्राथमिक दत्तों का संकलन साक्षात्कार अनुसूची के माध्यम से किया गया है। यहीं द्वितीयक आंकड़ों का संकलन सांख्यिकीय विभाग, महाविद्यालयों कार्यालयों एवं सांख्यिकीय कार्यालय के माध्यम से किया गया। इस अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि अत्यन्त जटिल एवं अभावग्रस्त आर्थिक परिस्थितियों में निवास करने वाले तथा परम्परागत सामाजिक कुण्ठाओं और असमानताओं से ग्रसित युवा समूह के सदस्य शिक्षा के माध्यम से अपने सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के परिवर्तन हेतु प्रयत्नशील हैं। निम्न सामाजिक–आर्थिक स्तर के होते हुए भी उनके शैक्षिक उपलब्धि का स्वरूप सन्तोषजनक है। उनके शैक्षिक जीवन की प्रमुख समस्या परिवार की आर्थिक स्थिति का असन्तोषजनक तथा परिवार में शैक्षिक परिवेश की अनुपयुक्तता है। शिक्षण संस्था में उनके सामाजिक सम्पर्क और अन्तः क्रिया की परिधि विस्तृत हो रही है। शिक्षक से उन्हें अपेक्षित सहयोग व सहानुभूति प्राप्त नहीं

है जिसका कारण इन विद्यार्थियों की संकोची एवं अतमुखी प्रकृति तथा इन समुदायों के प्रति परम्परागत रूप से व्याप्त पूर्व धारणा, पक्षपात और हेय दृष्टिकोण है। परम्परागत संस्थाएं व्यवहार प्रतिमान और मूल्य शिथिल पड़ते जा रहे हैं तथा आधुनिकता की ओर भी अग्रसर हो रहे हैं।

चंद्रवंशी, छैल कुमार (2016) ने छत्तीसगढ़ राज्य के कसडोल विकासखंड के बिंझवार जनजाति के विशेष सन्दर्भ में जनजातियों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य का एक समाजशास्वीय अध्ययन किया। इसके लिए उल्लेखित अध्ययन क्षेत्र के कुल 8 ग्रामों का चयन कर प्रत्येक ग्राम से 80 परिवारों का चयन सविचार एवं उद्देश्यपूर्ण निदर्शन प्रविधि के द्वारा किया गया। प्राथमिक दत्तों का संकलन एक साक्षात्कार अनुसूची के द्वारा किया गया। शोध के निष्कर्षों में विकासखंड मुख्यालय के निकट के ग्रानों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति दूरदराज के ग्रामों की तुलना में बेहतर पाई गई। परम्परागत जीवन शैली एवं उदासीनता की प्रवृत्ति के कारण शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति निम्न पाई पाई गई है। जनजातियों में शिक्षा एवं स्वास्थ्य हेतु नियोजित विकास के लिए किये गये सरकारी एवं गैर सरकारी संगठनों के कार्य पूर्ण रूप से सफल नहीं हुए हैं। प्रस्तुत शोध में यह भी पाया गया कि जनजातीय सांस्कृतिक मान्यताएँ शिक्षा एवं स्वास्थ्य की स्थिति को काफी हद तक प्रभावित करती हैं।

प्रगति, कोल, साईबरी (2015) ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्रों के शैक्षणिक विकास पर मध्यप्रदेश शासन द्वारा संचालित मेट्रिकोत्तर छात्रवासों का प्रभाव विषयक

शोध अध्ययन किया। इस अध्ययन का उद्देश्य छात्रावासों में रह रहे छात्रों के शैक्षणिक विकास एवं शासन द्वारा दी गई सुविधाओं एवं व्यवस्था का अध्ययन करना था। इन्होंने अपने अध्ययन के निश्र्वर्ष में पाया की अनुसूचित जाति एवं जनजाति के छात्रों के शैक्षणिक विकास के लिए छात्रावास खोले गये हैं। इन छात्रावासों में संचालित योजनाओं का क्रियान्वयन ठीक से नहीं हो रहा है जिसका प्रभाव छात्रो के क्षणिक विकास पर पड रहा है। छात्रावासों में रह रहे छात्रों के शैक्षणिक विकास में कोई विशेष प्रगति नहीं हुई है।

भारद्वाज, गीतिका (2015) ने आदिवासी बालिकाओं में स्वास्थ्य विषयक जागरूकता का अध्ययन किया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर पर ग्रामीण व शहरी आदिवासी बालिकाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता का अध्ययन करना था। इन्होंने ग्रामीण व शहरी 100 आदिवासी बालिकाओं का चयन किया। निष्कर्ष में पाया कि आदिवासी बालिकाओं में स्वास्थ्य के प्रति जागरूकता ग्रामीण आदिवासी बालिकाओं की तुलना में अधिक थी, परन्तु ये अन्तर कम पाया गया।

यदुलाल, कुसुम (2014) ने अनुसूचित जाति एवं जनजाति की स्कूली छात्राओं की मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक समस्याओं पर शोध कार्य किया। इस शोध अध्ययन का उद्देश्य अनुसूचित जाति एवं जनजाति छात्राओं की शैक्षिक एवं मनोवैज्ञानिक समस्याओं की प्रकृति एवं स्वरूप का पता लगाना था। इन्होंने अपने अध्ययन में परिणाम स्वरूप पाया कि माध्यमिक स्तर की अपेक्षा उच्चतर माध्यमिक स्तर की छात्राये भावात्मक रूप से अधिक समायोजित है साथ ही उच्च शिक्षित एवं अल्पशिक्षित अभिभावको की छात्राओं,

बच्चों में तुलनात्मक रूप में भिन्त्रता पाई गई हैं। अल्पशिक्षित और उब शिक्षित छात्राओं के शैक्षिक सामंजस्य में अन्तर है। शोध निष्कर्ष में पाया गया है कि अनुसूचित जाति एवं जनजाति की अधिकांश छात्राओं के माता–पिता और अभिभावक निरक्षर अथवा अशिक्षित हैं वे परंपरागत रूढ़िवादिता से ग्रस्त हैं व बालिका शिक्षा के पक्ष में नहीं होते हैं।

व्यास, डॉ. आशुतोष (2014) ने राजस्थान में अनुसूचित जनजाति की महिलाओं में शिक्षा की स्थिति विषयक शोध अध्ययन के निष्कर्ष में पाया कि दो दशकों में राजस्थान में शिक्षा व साक्षरता के क्षेत्र में उल्लेखनीय प्रगति नहीं हुई है। 2006 में मानव संसाधन विकास मंत्रालय, भारत सरकार ने शिक्षा व साक्षरता के क्षेत्र में राजस्थानको बीमारू राज्य की श्रेणी में घोषित किया गया है। यद्यपि सर्वशिक्षा अभियान तथा मिड–डे मील योजना के कारण जनजाति छात्राओं की संख्या में वृद्धि हुई है। क्योकि प्राथमिक शिक्षा प्रणाली में नामांकन और ठहराव को अधिक महत्व दिया गया है लेकिन शिक्षा की गुणवत्ता गौण है। प्राथमिक शिक्षा में ऐसे मूल्यों को महत्त्व दिया गया है जो समाज निर्माण में आवश्यक है। ग्रामीण व जनजातीय महिलाओं के लिए इसकी आवश्यकता और अधिक महत्त्वपूर्ण है।

निराला, कुमार संजय,, भगत, कु.अंजनी, (2013) ने छत्तीसगढ़ की भैना जनजाति की शैक्षणिक स्थिति का अध्ययन किया। शोध अध्ययन के निष्कर्ष में इन्होंने पाया की भैना जनजाति में बालक बालिकाओं के विवाह 14 से 18 की उम्र में कर दिये जाते हैं,

माता–पिता के अर्थोपार्जन के कार्य में संलग्नता के कारण परिवार में अन्य छोटे भाई–बहनों की देख–रेख की जिम्मेदारी का निर्वहन भी इन बालक बालिकाओं को करना पड़ता है। अशिक्षित सदस्य द्वारा पारिवारिक दायित्वों में संलग्नता एवं आर्थिक रूप से कमजोर होने के कारण भी भैना जनजाति के युवा सदस्यों में अपनी भावी पीढ़ी ने शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूकता का अभाव पाया गया।

नैयर, सोच्या. (2012) ने छत्तीसगढ़ के भुजियां एवं कमार जनजाति समुदाय के बालक बालिकाओं की सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया। इन्होंने शोध निष्कर्ष में पाया कि कमार एवं भुजियां जनजाति के बालक–बालिकाये नियमित रूप से विद्यालय जाते हैं साथ ही विद्यालय नियमित रूप से पढाई व अन्य गतिविधियां भी कराई जाती है। इन समुदाय के बच्चों में यह पाया गया कि ये पढाई के साथ घर का भी काम करते हैं। सरकार द्वारा उन्हें शैक्षणिक सुविधाएं प्रदान की जाती हैं, इनको पंचायत सुविधा प्राप्त होती है, इन समुदायों के बालक बालिकाएं सामाजिक नियमों से परिचित है एवं उनका पालन करते हैं। विवाह की उम्र 18व 21 वर्ष है, इस समाज के लोग हिन्दी, छत्तीसगढ़ी, कमार, भुजियां भाषा का प्रयोग करते हैं।

भाट (2014) द्वारा, हाईस्कूल के छात्रों की गणित की उपलब्धि पर समस्या समाधान योग्यता का प्रभाव का अध्ययन किया गया। इस अध्ययन हेतु अध्ययनकर्ता ने दक्षिण कश्मीर के विभिन्न संस्थाओं के 10 वीं कक्षा के 598 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया। छात्रों की समस्या समाधान योग्यता के मापन के लिए ए.एन. दूबे द्वारा निर्मित परीक्षण का प्रयोग किया गया तथा शैक्षिक उपलब्धि हेतु आंकड़े छात्रों की पिछली कक्षा

के प्राप्त उपलब्धि पत्र द्वारा लिये गये। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि समस्या समाधान योग्यता व गणित की उपलब्धि के मध्य धनात्मक सम्बन्ध है तथा गणित विषय की उपलब्धि की सर्वश्रेष्ठ भविष्यवक्ता है। अध्ययन यह भी बताता है कि 78.3 प्रतिशत छात्रों व 78.2 प्रतिशत छात्राओं के सन्दर्भ में अनुमानित परिणाम, मूल्यांकित परिणामों के समान थे।

हूडा एण्ड रानी देवी (2014) द्वारा समस्या समाधान योग्यता का किशोरों के लिए महत्व पर अध्ययन किया गया। इन्होनें अपने अध्ययन में पाया कि समस्या समाधान की योग्यता मनुष्य की प्राकृतिक प्रक्रिया है जिसे इच्छाशक्ति, अथक प्रयास और विशिष्ट प्रशिक्षण द्वारा उत्पन्न किया अथवा बढ़ाया जा सकता है।

जीना (2014) द्वारा स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली तथा समस्या समाधान योग्यता पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली व समस्या समाधान योग्यता का अन्तर लिंग के संदर्भ में अध्ययन करना था। इस उद्देश्य के परीक्षण हेतु निम्नलिखित परिकल्पनाएं बनाई गई – 1) स्नातक स्तर के विज्ञान के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली में सार्थक अंतर होता है। 2) स्नातक स्तर के विज्ञान के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता में सार्थक अन्तर होता है। 3) स्नातक स्तर के विज्ञान के विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक शैली और समस्या समाधान में सार्थक अन्तर नहीं है। अध्ययन हेतु निम्न मानकीकृत उपकरणों का प्रयोग किया गया। संज्ञानात्मक शैली हेतु प्रवीन कुमार झा द्वारा निर्मित संज्ञानात्मक शैली इन्वेन्टरी का प्रयोग किया गया। समस्या समाधान योग्यता के परीक्षण हेतु एल.एन.दूबे निर्मित परीक्षण प्रयोग किया गया। अध्ययन हेतु जम्मू कश्मीर के

फुलवा तथा अनंतनाग जिले के 300 विद्यार्थियों को सरल यादृच्छिक विधि द्वारा न्यादर्श के रुप में लिया गया, जिसमें 150 छात्र व 150 छात्राएं थी। जीना ने अपने अध्ययन में पाया कि संज्ञानात्मक शैली तथा समस्या समाधान योग्यता के मध्य सार्थक अन्तर व धनात्मक संबंध होता है। अध्ययन में यह भी पाया गया कि छात्र–छात्राओं की समस्या समाधान योग्यता में कोई सार्थक अन्तर नहीं हैं।

सिंह (2013) द्वारा उच्च व निम्न शैक्षिक उपलब्धि प्राप्तकर्ताओं की चिंता व समायोजन तरीके पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन हेतु इन्होंने 100 आदिवासी महाविद्यालय के विधार्थियों का न्यादर्श के रुप में चयन किया जिसमें से 50 विद्यार्थी उच्च शैक्षणिक उपलब्धि व 50 निम्न शैक्षणिक उपलब्धि वाले थे। अध्ययन में पाया गया कि उच्च शैक्षणिक उपलब्धि वाले छात्रों में चिंता का स्तर अधिक था परन्तु इसका समायोजन स्तर पर बेहतर प्रभाव था जबकि निम्न शैक्षणिक उपलब्धि वाले विधार्थियों पर इसका विपरीत प्रभाव देखा गया अर्थात उनका चिंता का स्तर कम था व इसका उनके समायोजन स्तर पर अच्छा प्रभाव नहीं था। दोनों ही समूहों के लिए चिंता व समायोजन के मध्य सार्थक प्रभाव पाया गया।

शर्मा (2007) द्वारा हायर सेकेण्डरी के विधार्थियों की समस्या समाधान योग्यता तथा वैज्ञानिक दृष्टिकोण का शैक्षिक उपलब्धि के निर्धारक के रुप में अध्ययन पर कार्य किया इस अध्ययन के उद्देश्य लिंग के आधार पर विधार्थियों के वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अध्ययन करना था तथा शैक्षणिक उपलब्धि, वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा समस्या समाधान योग्यता के मध्य संबंध का अध्ययन करना था। इन्होनें 240 विधार्थियों पर अध्ययन किया, व अपने शोध में पाया कि वर्तमान पाठ्यचर्या केवल सामान्य स्तर का

वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा समस्या समाधान योग्यता विकसित करने में सहायक है तथा शैक्षणिक उपलब्धि, समस्या समाधान योग्यता व वैज्ञानिक दृष्टिकोण के मध्य एक सकारात्मक संबंध है।

सुकुल (2007) द्वारा समस्या समाधान प्रदर्शन पर व्यक्तिगत व समूह निर्धारण के प्रभाव का अध्ययन किया गया इस अध्ययन के उद्देश्य थे व्यक्तिगत स्थिति का समस्या समाधान पर प्रभाव तथा समूह सहभागिता का समस्या समाधान पर प्रभाव, सकुल ने अपने अध्ययन में पाया व्यक्तिगत स्थिति समस्या समाधान के लिए समूह सहभागिता से बेहतर होती है, समूह सहभागिता द्वारा समस्या समाधान की गति बढ़ जाती है।

सास्वता, एन. विश्वास और उर्मि (2007)ने आध्यात्मिकता, धार्मिकता और कार्य–अभिप्रेरणा पर अध्ययन किया जो कि एक अनुभवजन्य अनुसधांन है। उन्होंने आध्यात्मिकता और धार्मिकता के बीच सम्बन्ध की खोज की ओर कार्य–अभिप्रेरण पर उनके प्रभाव का अध्ययन किया। इसके लिए एक बड़ा न्यादर्श (N=1150) विभिन्न सेवा क्षेत्रों जैसे बैकिंग, बीमा और परिवहन जैसे क्षेत्रों के प्रबंधकों का लिया गया।

इनके द्वारा धार्मिकता आध्यात्मिकता, स्वायत्ता, योग्यता लक्ष्य अभिविन्यास सीखना और निषपादन अभिविन्यास का मापन किया गया। प्रतिभागियों से उम्र, वेतन स्तर, संगठन के स्तर और कार्य अनुभव के वर्ष के आधार पर जनसांख्यिकी आंकड़े एकत्रित किये गये। परिणाम ये सुझाव देते है कि आध्यात्मिकता द्वारा आन्तरिक

अभिप्रेरणा और लक्ष्य अभिविन्यास का पूर्वानुमान लगता है। इन निष्कर्षों का निहिता संगठन और प्रबंधकों के सम्पूर्ण विकास और उच्चतर सजृनात्मकता में है।

सक्सेना एवं सिंह (2007) विवाहित एवं अविवहित सेवारत महिलाओं की विभिन्न कार्यक्षेत्रों में कार्य सन्तुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए चार कार्यक्षेत्रों (शिक्षा, चिकित्सा अभियांत्रिकी एवं विधि) में सेवारत 200 महिलाओं की (100 विवाहित एवं 100 अविवाहित) का चयन न्यादर्श हेतु किया। इस अध्ययन में प्रदत्तों को संकलित करने के लिए व्यावसायिक सन्तुष्टि मापक का प्रयोग हुआ तथा सांख्यिकीय विलेषण के द्वारा प्राप्त हुए निष्कर्ष इस प्रकार आये –(1) विवाहित तथा अविवाहित सेवारत महिलाओं की कार्य सन्तुष्टि में अन्तर पाया गया। (2) चारों कार्य क्षेत्रों में कार्यरत विवाहित एवं अविवाहित महिलाओं की कार्य सन्तुष्टि में अन्तर पाया गया।

पाण्डेय (2007) ने माध्यमिक विद्यालय एवं महाविद्यालय के अध्यापकों के मध्य व्यावसायिक सन्तुष्टि एवं समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए कानपुर नगर के विभिन्न विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के 150 अध्यापकों का चयन न्यादर्श के रूप में किया। इस अध्ययन में प्रदत्तों का संकलन व्यावसायिक सन्तुष्टि मापक (शोधकर्ता) एवं सामाजिक समायोजन परिसूची (आर. सी. देवा) की सहायता से किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर निम्न तथ्य प्रकाश में आये–(1) माध्यमिक विद्यालय के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा समायोजन के मध्य ऋणात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया। (2) महाविद्यालय के

अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा समायोजन के मध्य भी ऋणात्मक सह–सम्बन्ध पाया गया।,

वर्मा (2007)– प्रस्तुत शोध में उच्च शैक्षिक स्तर की विवाहित तथा अविवाहित महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य तथा अवसाद पर उनके रोजगार के प्रभाव का अध्ययन किया गया। अध्ययन के उद्देश्य की पूर्ति हेतु यादृच्छिकी विधि द्वारा 21 से 35 आयु वर्ग तथा उच्च शैक्षिक स्तर की 60 विवाहित तथा 60 अविवाहित कुल 120 महिलाओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। जिनमें से 60 महिलाये कार्यरत तथा 60 महिलायें अकार्यरत थीं। प्रदत्तों के संकलन हेतु बैकस डिप्रेशन इन्वेटरी तथा थोर्प, क्लार्क एवं टिगस द्वारा निर्मित मानसिक स्वास्थ्य प्रश्नावली का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से परिणामित हुआ कि रोजगार एवं वैवाहिक स्थिति महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य तथा अवसाद को प्रभावित करते हैं। रोजगार एवं विवाह महिलाओं की आर्थिक, भावात्मक तथा सामाजिक आवश्यकताओं को काफी हद तक संतुष्ट करते हैं। महिलाओं के अवसाद मानों से यह स्पष्ट हुआ कि महिलायें रोजगार तथा विवाह दोनों से अवसादित होती हैं। साथ ही यह ज्ञात हुआ कि अविवाहित तथा अकार्यरत महिलायें, विवाहित तथा कार्यरत महिलाओं से अधिक अवसादग्रस्त पायी गई।

राठौर एवं ब्यादवाल (2006) ने अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि पर उनके लिंग एवं वैवाहिक स्तर के प्रभाव का अध्ययन करने के लिए 200 अध्यापकों। (50 महिला, 50 पुरुष 50 विवाहित 50 अविवाहित) का चयन किया। इस अध्ययन में प्रदत्तों का संकलन व्यावसायिक सन्तुष्टि मापक की सहायता से किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों

के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक व्यावसायिक सन्तुष्टि पायी गयी।

सिंह एवं सिंह (2006)– प्रस्तुत शोध अध्ययन में वाराणसी शहर की मध्य आयु वर्ग की महिला शिक्षिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य स्तर का अध्ययन किया गया। अध्ययन का उद्देश्य शिक्षिकाओं की चिंता, अवसाद, पारिवारिक समस्या, कार्य समस्या आदि को विश्लेषित करना था। अध्ययन हेतु वाराणसी के 15 सरकारी विद्यालयों की 50 मध्य आयु वर्ग की शिक्षकाओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। प्रदत्त संकलन हेतु सामान्य स्वास्थ्य प्रश्नावली तथा साइको सोशल स्ट्रेस स्केल को समस्त न्यादर्श पर प्रशासित किया गया। साथ ही शिक्षकाओं का एक साक्षात्कार भी किया गया। साइको सोशल स्ट्रेस स्केल के प्राप्त मानों के विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि 54 प्रतिशत मामलों में उच्च स्तर तनाव, 18 प्रतिशत मामलों में निम्न स्तर तनाव तथा 28 प्रतिशत मामालों में मध्य स्तर तनाव पाया गया। 64 प्रतिशत मामलों में चिंता का स्तर निम्न तथा 32 प्रतिशत में मध्यम पाया गया। 92 प्रतिशत मामलों में अवसाद स्तर निम्न रहा। प्रायः मध्य आयु वर्ग की शिक्षिकाओं का स्वास्थ्य सामान्य पाया गया। मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं से निजात के लिये शिक्षिकाओं द्वारा सही प्रकार से कार्य सम्पादन हेतु कार्यनीत विकसित करने की आवश्यकता है।

बंसीबिहारी पंडित और लता सुखड़े (2006) ने शिक्षक प्रभावशीलता पर संवेगात्मक परिपक्तवता के प्रभाव का अध्ययन किया और यह पाया गया कि महिला शिक्षक पुरुष शिक्षकों की तुलना में संवेगात्मक रूप से अधिक परिपक्व स्थिर थी।

मारे (2006) द्वारा समस्या समाधान विधार्थियों की अभिवृत्ति का मापन, अपेक्षा व विश्वास पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन के उद्देश्य थे कि विधार्थियों के समस्या समाधान योग्यता के प्रति स्वयं मूल्यांकन का अध्ययन करना, इन्होनें अध्ययन में पाया कि कोई व्यक्ति समस्या समाधान उसकी योजनाओं के बारे में अनुभव व प्रयास द्वारा सीख सकता है।

आदिनारायण रेड्डी पी. और उमा देवी डी. (2005) ने 'ट्राइबल' नामक पुस्तक लिखी जिसमें उन्होंने आदिवासी महिला शिक्षा–प्रतिबंध और रणनीतियाँ पर ध्यान आकर्षित किया उनके शोध में यह पाया गया की जनजातीय जनसँख्या देश की कुल जनसंख्या का लगभग केवल सात प्रतिशत हैं। उनके शोध के मुख्य उद्दश्य थे :साक्षरता से जुड़ी समस्याओं को तीव्र करना,तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में आदिम जनजातीय महिलाओं की समस्याओं के कारकों का चित्रण करना,आदिम जनजातीय महिलाओं के बीच साक्षरता की वृद्धि में योगदान देना, तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश चल रहे विकास कार्यों की समीक्षा करना,आदिम जनजातियों के बीच साक्षरता को बढ़ावा देने पर जोर देने वाला कार्यक्रम का अध्ययन करना,तमिलनाडु और आंध्र प्रदेश में महिलाओं के लिए उपयुक्त रणनीतियाँ विकसित करना,आदिम जनजातीय महिलाओं में साक्षरता को बढ़ावा देना,उनके शोध के अनुसार आदिवासी महिलाओं में साक्षरता की वृद्धि तुलनात्मक रूप से कम पाई गई।

जनजातीय शिक्षा प्रकोष्ठ, डीपीईपी/एसएसए (2005) ने भाषायी पाठ्यपुस्तकों प्रभाव पर एक अध्ययन किया । कक्षा–1 की भाषा की पाठ्यपुस्तकें आठ जनजातीय बोलियों में विकसित की गईं और स्कूलों में शुरू की गईं । इस शोध के उद्देश्य निम्न थे:भाषायी पाठ्यपुस्तकों का अनुसूचित छात्रों पर प्रभाव का अध्ययन करना,कक्षा में पाठ्यपुस्तक का संचालन का निरीक्षण करना,छात्र की भागीदारी का आकलन करना,नई पाठ्य पुस्तकों के प्रभाव का अध्ययन करना ।शोध के निष्कर्ष में यह पाया गया की छात्र नियमितता और समय की पाबन्दी को बढ़ाया गया। विद्यार्थियों के ठहराव में वृद्धि हुई छात्रों के मन से स्कूल का डर दूर हुआ।

चांद (2005) ने हिमाचल प्रदेश के उच्च विद्यालयों में पढाने वाले शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा एवं कार्य संतुष्टि का मौजूदा खेल सुविद्याओं के सन्दर्भ में मूल्यांकन किया। अध्ययन के लिए 300 शारीरिक शिक्षकों का न्यादर्श (Sample) लिया गया आंकडों के संकलन के लिए कार्य अभिप्रेरणा स्केल (के. जी. अग्रवाल) और कार्य संतुष्टि प्रश्नावली (कुमार और मुथा) का प्रयोग किया गया। शिक्षकों की कार्य अभिप्रेरणा की तुलना निर्भरता, संगठनात्मक अभिविन्यास, कार्य समूह सम्बन्ध, प्रोत्साहन, नौकरी की स्थिति जैसे घटकों पर की गई थी। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला कि शारीरिक शिक्षा शिक्षकों की कार्य संतुष्टि और कार्य प्रेरणा खेल सुविद्याओं के स्तर से सम्बन्धित नहीं थे। अध्ययन में यह भी पता चला कि निचले स्तर की खेल सुविद्या स्कूलों में पदस्थापित शिक्षकों के पास उच्च स्तर की प्रेरणा होती है। जबकि औसत स्तर के खेल सुविद्याओं वाले स्कूलों के शिक्षकों की कम।

आयशाबी एवं अमृत (2005) ने प्राथमिक विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा उनकी शिक्षण दक्षता में सम्बन्ध का अध्ययन करने के लिए केरल के विभिन्न जिलों के 224 प्राथमिक अध्यापकों का चयन यादृच्छिकी विधि द्वारा किया। इसमें आँकड़ों का संकलन करने के लिए शिक्षण दक्षता रेटिंग स्केल एवं व्यावसायिक सन्तुष्टि प्रश्नावली का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष निकाला कि अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा उनकी शिक्षण दक्षता में सकारात्मक सम्बन्ध था।

सहाय एवं राज (2005) ने पांडिचेरी राज्य के सरकारी विद्यालयों के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देश्य व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा वेतन के मध्य सार्थक अन्तर ज्ञात करना था। इसके लिए 82 अध्यापकों का चयन यादृच्छिकी विधि द्वारा किया गया तथा प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा वेतन के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

अमनदीप और गुरूप्रीत (2005) ने निष्कर्ष निकाला कि" पुरुष और महिला शिक्षक महत्वपूर्ण रूप से भिन्न नही है, और शिक्षण योग्यता का परिवर्तन शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अग्रवाल एवं अग्रवाल (2004) ने विद्या भारती द्वारा संचालित कानपुर नगर के सरस्वती विद्या मन्दिर के अध्यापको की कार्य – संन्तुष्टि का अध्ययन करने के

लिए कानपुर के 4 सरस्वती विद्या मन्दिर के 114 अध्यापकों (77 पुरुष व 3 महिला) का चयन किया। इस अध्ययन में महिला एवं पुरुष की व्यावसायिक सन्तुष्टि के मध्य कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया

विजय लक्ष्मी और माइथिल (2004) ने शिक्षक प्रभावशीलता और कार्य अभिविन्यास पर व्यक्तिगत चर (आयु,वैवाहिक स्थिति,लिंग) और पेशेवर चर (अनुभव योग्यता,शिक्षण का विषय, पद, कॉलेज प्रबधन के कॉलेज का प्रकार का स्तर) के प्रभाव का अध्ययन किया। आंध्र प्रदेश के विजयनगरम जिले के जूनियर कॉलेजों, डिग्री कॉलेजों और पेशेवर कॉलेजो में कार्यरत 220 शिक्षकों पर अध्ययन किया। परिणामों से पता चला कि 35वर्ष तक और 35वर्ष से अधिक आयु के शिक्षकों, विवाहितों और अविवाहित विभिन्न पदनाम वाले शिक्षकों और जूनियर डिग्री कॉलेजो में काम करने वाले शिक्षकों के बीच उनकी शिक्षक प्रभावशीलता के सबंध में महत्वपूर्ण अन्तर था। उनके कार्य अभिन्यास के सबंध में विवाहित और अविवाहित, पुरुष और महिला शिक्षकों, विभिन्न सवंर्गो के शिक्षकों जूनियर और डिग्री कॉलेज के कर्मचारियों और सरकारी एवं निजी कॉलेज के शिक्षकों के बीच सार्थक अन्तर मौजूद था। शिक्षक प्रभावशीलता और उनके कार्य अभिविन्यास के बीच सकारात्मक और मध्यम सहसबंध था। 35वर्ष से अधिक आयु के शिक्षक विवाहित शिक्षक, महिला शिक्षक, सहायक प्रोफेसर और डिग्री कॉलेज शिक्षक अपने समकक्षो की तुलना में अधिक प्रभावी है।

वंदना और पुनिया (2004) ने शैक्षिक प्रबंधको की सहज क्षमताओं और मानव संसाधन प्रभावशीलता का अध्ययन किया।निष्कर्षों ने संकेत दिया कि शैक्षिक प्रबंधको को समस्याओं को खोजने और उनके प्रभावी कार्यान्वयन के माध्यम से समाधान तक पहुँचने से पहले उद्वेश्यों को निर्धारित करने की आवश्यकता के विषय में अच्छी तरह से पता है। यहा लक्ष्य निर्धारण की पूरी प्रक्रिया में प्रशासकों की सहज क्षमताओं की बड़ी भूमिका होती है। वास्तव में ऐसी स्थिति में जब सब कुछ नियत्रंण से बाहर हो रहा है,संकट प्रबधंन में सक्ष्म लोगो की प्रतिक्रियाओं और निर्णयों में सहज क्षमताएँ जीवित हो जाती है। इस प्रकार तीव्र जटिलता और संधर्श द्वारा निर्मित समस्याओं का निदान करने की क्षमता के लिए सर्वोतम परिणाम प्राप्त करने के लिए एक सहज ज्ञानयुक्त दिमाग की आवश्यकता हो सकती है। जिसका अर्थ है कि अंर्तज्ञान शब्द तर्क विपरीत कुछ नही बल्कि कारणों के प्रांत के बाहर कुछ को दर्शाता है।

सिंह (2002) ने शिक्षकों के मूल्यो,शिक्षण के प्रति दृष्टिकोण और शिक्षक प्रभावशीलता के सबंध में शिक्षक शिक्षकों की कार्य संतुष्टि का तुलनात्मक अध्ययन किया। अध्ययन के परिणाम बताते है कि कार्य संतुष्टि –श्सामाजिक मूल्य सुखवादी मूल्य,शक्ति मूल्य के साथ धनात्मक रूप से सहसम्बन्धित है। शिक्षण के प्रति – ष्टिकोण कार्य संतुष्टि के साथ धनात्मक सहसंबधित है। शिक्षक प्रभावशीलता धनात्मक और सार्थक रूप से कार्य संतुष्टि के साथ सहसम्बन्धित पाई गई।

श्रीवास्तव (2004) प्रस्तुत शोध में आशावादी तथा निराशावादी छात्रों के मानसिक स्वास्थ्य और व्यक्तित्व समायोजन के मध्य सार्थक अंतर का अध्ययन किया गया।

अध्ययन हेतु न्यादर्श के रूप में 75 छात्रों तथा 75 छात्राओं कुल 150 जनपद कानपुर के इंटरमीडियेट स्तर के छात्रों को चयनित किया गया। अध्ययन हेतु पाराशर (1989) द्वारा निर्मित आप्टीमिस्टिक–पैसीमिस्टिक एटीट्यूड स्केल, कुमार एवं ठाकुर (1985) द्वारा निर्मित मिथिला मेंटल हेल्थ इन्वेंटरी तथा शर्मा (1972) द्वारा निर्मित पर्सनल एडजस्टमेंट इन्वेटरी का प्रयोग किया गया। अध्ययन के परिगामी विश्लेषण से ज्ञात हुआ कि आशावादी छात्रों का मानसिक स्वास्थ्य निराशावादी छात्रों की तुलना में सार्थक रूप से अच्छा था। व्यक्तिगत समायोजन के क्षेत्र में आशावादी एवं निराशावादी छात्रों के स्तर में सार्थक भिन्नता पाई गई।

खान (2003) राज. सी. सै. शिक्षकों और शिक्षक प्रदर्शन के बीच कार्य अभिप्रेरणा का प्रेक्षण किया। 250 सरकारी सीनियर सैकण्डरी स्कूल के शिक्षकों का न्यादर्श लिया गया। आंकडों के संकलन के लिए कार्य अभिप्रेरणा प्रश्नावली अग्रवाल द्वारा और कुमार एवं मुथा द्वारा शिक्षक प्रभावशीलता स्केल का उपयोग किया गया था। अध्ययन के परिणामों द्वारा निष्कर्ष निकाला गया कि पुरूष शिक्षक और महिला शिक्षकों मे कार्य प्रेरणा के आधार पर कोई सार्थक अन्तर नहीं था। पुरूष शिक्षकों को कार्य अभिप्रेरणा के तीन आयाम निर्भरता, कार्य समूह सम्बन्ध और मनोवैज्ञानिक कार्य प्रोत्साहन के सम्बन्ध में अपने समकक्षों से अधिक बेहतर पाया गया। विभिन्न आयु समूह वाले शिक्षकों की कार्य प्रेरणा में कोई सार्थक अंतर नहीं था। विद्यार्थियों की उपलब्धि के सम्बन्ध में उच्च व निम्न कार्य प्रेरणा वाले शिक्षकों के बीच सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

बेगम एवं राज (2003) ने जॉब सैटिस्फैक्शन एण्ड स्पीरीचूअलिस्टिक ओरियन्टस अमंग कॉलेज टीचर्स विषय पर शोध कार्य किया। इस शोध का उद्देश्य कला एवं विज्ञान संकाय के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन करना था। इसके लिए केरल के 412 अध्यापकों (206 कला एवं 206 विज्ञान) का चयन स्तरीकृत यादृच्छिकी विधि द्वारा किया तथा सांख्यिकीय विलेषण के आधर पर निष्कर्ष निकाला कि कला एवं विज्ञान संकाय के अध्यापकों की व्यावसायिक व्यावसायिक सन्तुष्टि का स्तर समान था जबकि कला संकाय की महिला अध्यापकों में अधिक सन्तुष्टि थी।

अग्रवाल एवं जायसवाल (2003) ने सरस्वती शिशु मन्दिर के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का अध्ययन करने के लिए कानपुर नगर के 6 सरस्वती शिशु मन्दिर का चयन किया।इस अध्ययन में प्रदत्तों के संकलन हेतु व्यावसायिक सन्तुष्टि मापक का प्रयोग किया गया तथा निष्कर्ष निकाला कि महिला एवं पुरुष अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नही होता है।

अलका सक्सैना (2002) ने अपनी पुस्तक 'द डायनामिक ऑफ ट्राइबल एजुकेशन' में जनजातीय जीवन पर आधुनिक शिक्षा के प्रभाव पर प्रकाश डाला । उनके अनुसार शिक्षा को उनके आर्थिक जीवन को बेहतर बनाने का एक शक्तिशाली साधन बनना चाहिए। उन्होंने आदिवासी शिक्षा के लिए ऐसी अंतर्दृष्टि प्रदान की जो इसकी गति को बदलने में काफी मददगार साबित होगी ।

खोपाध्याय, रवीन्द्रनाथ और घोष, सुधेष्णा (2002) ने जनजातीय साक्षरता की गुणवत्ता का अध्ययन किया उनके शोध के प्रमुख प्रमुख निष्कर्ष थे :अखिल भारतीय स्तर पर जनजातीय साक्षरता दर बहुत कम थी। सामान्य और जनजातीय दोनों के लिए साक्षरता के स्तर में विभिन्न राज्यों में भिन्नताएँ हैं ।

रेड्डी, पी. सुधाकर (2002) ने जनजातीय आश्रम विद्यालयों की कार्यप्रणाली का मूल्यांकन किया आंध्र प्रदेश और महाराष्ट्र के क्षेत्र के अध्ययन में यह पाया गया की आंध्र प्रदेश में आदिवासियों के बीच लड़कियों के नामांकन को प्रोत्साहित नहीं किया गया और माता–पिता को भी प्रोत्साहित नहीं किया गया उनकी शिक्षा में कोई रुचि नहीं थी. महाराष्ट्र में केवल कुछ ही आश्रम विद्यालय व्यावसायिक एवं शिल्प शिक्षा में प्रशिक्षण की सुविधा थी। अभिभावक शिक्षक संघ आंध्र प्रदेश में केवल 4 स्कूलों और महाराष्ट्र में 6 स्कूलों में गठित किए गए थे और बैठकें प्रत्येक शैक्षणिक वर्ष की पहली और आखिरी तिमाही में ही आयोजित की गईं बैठकें आयोजित करना कठिन था और अभिभावकों की प्रतिक्रिया भी कठिन थी ।

शुक्ला (2002) ने स्ववित्तपोशी तथा अनुदानित विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण मनोवृत्ति,कार्य–सन्तुष्टि तथा छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन करने के लिए स्ववितपोशी तथा अनुदानित प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के 200 अध्यापकों का चयन न्यादर्श के लिए किया। इसमें आँकड़ों क संकलन करने के लिए अध्यापक मनोवृत्ति परिसूची (एस0पी0 अहलूवालिया) एवं व्यावसायिक

सन्तुष्टि मापक (मीरा दीक्षित) का प्रयोग हुआ तथा प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर स्ववित्त पोशी तथा अनुदानित विद्यालयों के अध्यापकों की शिक्षण मनोवृत्ति तथा कार्य–सन्तुष्टि में कोई सार्थक अन्तर नही पाया गया।

भूयान एवं चौधरी (2002) ने कोरिलेटस ऑफ जॉब सैटिस्फैक्शन विषय पर शोध कार्य किया। जिसका उद्देश्य अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर तथा अध्यापन अनुभव के मध्य साहचर्य का पता लगाना था। इस अध्ययन में न्यायदर्श के रूप में असम के कामरूप तथा गोलपार जिले के विभिन्न विद्यालयों के 210 अध्यापकों का चयन यादृच्छिकी विधि द्वारा किया गया। प्राप्त आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि के स्तर तथा अध्यापन अनुभव के मध्य कोई साहचर्य नही पाया गया।

डोटिया (2000)ने राजस्थान के वाणिज्य के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि को प्रभावित करने वाले कारकों का पता लगााना तथा उसका छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन विषय पर शोध कार्य किया। इसका उद्देश्य अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि तथा मासिक आय के मध्य सम्बन्ध का पता लगााना था इस अध्ययन में इस अध्ययन में न्यादर्श के रूप में राजस्थान के वाणिज्य संकाय के अध्यापकों तथा छात्रों का चयन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि अध्यापकों की व्यावसायिक तथा मासिक आय के मध्य धनात्मक सह– सम्बन्ध होता है।

बेगम व धर्मगदन (2000) ने केरल के अध्यापकों की व्यावसायिक सन्तुष्टि का लिंग–भिन्नता के आधार पर अध्ययन किया। इसमें न्यादर्श के रूप में केरल के विभिन्न महाविद्यालयों में कार्यरत 415 अध्यापकों का चयन किया गया तथा आँकड़ों के संकलन के लिए व्यावसायिक सन्तुष्टि सूची का प्रयोग हुआ। इस अध्ययन में पुरुषों की अपेक्षा महिलाओं में अधिक व्यावसायिक सन्तुष्टि पायी गयी।

अग्रवाल (2000) ने जॉब सैटिस्फैक्शन ऑफ टीचर्स इन रिलेशन टु सम–डैमोग्राफिक वैरिएबल्स एण्ड वैल्यूज विषय पर शोध कार्य किया। इस अध्ययन का उद्देशय प्रशिक्षित तथा अपशिक्षित अध्यापकों के मध्य व्यावसायिक सन्तुष्टि का मापन करना था। इसके लिए प्राथमिक तथा माध्यमिक विद्यालयों के 503 अध्यापकों का चयन करके पता लगाया कि प्रशिक्षित अध्यापकों में अपने व्यवसाय को लेकर अधिक सन्तुष्टि होती है। तथा आँकड़ों के सांख्यिकीय विलेषण के आधार पर महिलाओं में अधिक व्यावसायिक सन्तुष्टि पायी गयी।

विदेशों में किये गये शोध कार्य

Durie, M, (2021) ने अपने लेख में न्यूजीलैण्ड के माओरी जनजाति के अनुभवों संदर्भ में स्वदेशी उच्च शिक्षा के बारे में किये अपने शोध कार्य का सारांश प्रस्तुत किया है। इस पत्र में माओरी जनजाति की उच्च शिक्षा हेतु चार सिद्धांतों स्वदेशीयता, अकादमिक सफलता, भागीदारी एवं भविष्योन्मुखता के बारे में चर्चा की गई है। लेख में माओरी जनजाति के लिए अनेक शैक्षिक अवसरों, यथा– राष्ट्रीय नीतियों, शैक्षिक नीतियों, कैम्पस नवाचारों एवं स्वदेशीय नेतृत्व के बारे में भी बताया गया है।

Macfarlane, A. et al. (2020) का शोध पत्र न्यूजीलैण्ड के आदिवासी समुदाय 'माओरी' जनजाति की शैक्षिक स्थिति पर किये गये चार शोध कार्यों पर आधारित है। इस शोध पत्र में माओरी, जो कि न्यूजीलैण्ड के मूल निवासी हैं, के लिए सांस्कृतिक दृष्टि से सुरक्षित विद्यालयों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। इसके लिए माओरी समुदाय के लिये एक ऐसी शैक्षिक रूपरेखा के बारे में कल्पना की गई है, जिसमें सामाजिक एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि की साझेदारी के माध्यम से शिक्षण–व्यूहरचना का निर्माण किया जाये। इस कार्य के लिए दो विभिन्न मानवजातीय वैयक्तिक अध्ययनों से ऑकडे एकत्रित कर उनका अध्ययन किया गया। इस प्रकार साक्ष्यों पर आधारित यह शोध पत्र माओरी जनजाति के विद्यार्थियों हेतु सांस्कृतिक रूप से सुरक्षित विद्यालयों की स्थापना की अनुशंसा करता है।

Sorkness, H.L. & Gibson, L.K. (2018) ने मूल अमरीकी निवासियों को समर्पित एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में अमरीका के मूल निवासियों 'रेड इंडियंस' के विद्यार्थियों को व्यस्त रखने हेतु प्रभावी शिक्षण–व्यूहरचनाओं पर एक शोध पत्र प्रस्तुत किया। इस पत्र में 'रेड इंडियंस' विद्यार्थियों में बढ़ती ड्रॉपआउट समस्या पर चिंता व्यक्त की गई। यह शोध कार्य सर्वेक्षण विधि द्वारा किया गया जिसमें प्रभावी शिक्षण–व्यूहरचनाओं के संदर्भ में कई प्रश्न पूछे गये। शोध परिणामों में पाया गया कि 'रेड इंडियंस' की निम्न शैक्षिक उपलब्धि का प्रधान कारण उनकी सांस्कृतिक भिन्नता है। इन विद्यार्थियों हेतु विशिष्ट शिक्षण– व्यूहरचनाओं की ओर इंगित करते हुए शोधकर्ताओं ने शिक्षक की भूमिका एक अधिगमकर्ता के तौर पर विकसित किये जाने पर बल दिया।

Price, M. et al. (2017) ने अमरीका के मूल निवासियों 'रेड इंडियंस' के सीखने के तरीकों एवं कक्षा–कक्ष अभ्यास के निहितार्थों पर लेख लिखा। इस लेख में अमरीका के 'रेड इंडियंस' विद्यार्थियों एवं अन्य श्वेत विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि में अन्तर की ओर इंगित किया गया है। इसमें बताया गया है कि 'रेड इंडियंस' विद्यार्थियों की अकादमिक उपलब्धि चेत समुदाय के विद्यार्थियों की तुलना में काफी कम है। साथ ही विद्यालयी शिक्षा बीच में ही छोड़ देने की दर भी इन विद्यार्थियों में बेत विद्यार्थियों की तुलना में अधिक पाई गई, जो कि एक चिंतनीय विषय है। इस लेख में मूल अमरीकी 'रेड इंडियंस' विद्यार्थियों के सीखने के उन तरीकों का भी उल्लेख किया गया है, जो उन्हें अन्य समुदायों के समकक्ष लाने में मदद कर सकता है, यथा– विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, क्रमबद्ध अध्ययन एवं तथ्यपरकता इत्यादि।

Aslam, M. (2016) ने पाकिस्तान के आदिवासी जिलों में लिंग के आधार पर विद्यालय छोड़ने वाले विद्यार्थियों की समस्याओं का अध्ययन किया। इस शोध के निष्कर्ष में पाया कि देश के आदिवासी जिलों में प्राथमिक शिक्षा के क्षेत्र में लड़कियों की अपेक्षा लडको की संख्या अधिक है। विभिन्न अध्ययनों से लैंगिक असमानता का पता चला और पाया कि शिक्षा में लडकियों की संख्या में कमी का कारण ग्रामीण एवं आदिवासी माता–पिता में शिक्षा का अभाव पाया गया।

Ayub Buzdar, Muhammad; Ali, Akhtar (2014) ने बालिका शिक्षा के प्रति पाकिस्तान के डेरा गाजी खान जिले के आदिवासी क्षेत्रों के अभिभावकों की अभिवृत्ति का अध्ययन

किया। इस शोध कार्य का उद्देश्य आदिवासी माता–पिता का बालिका शिक्षा के प्रति दृ ष्टिकोण को प्रभावित करने वाले कारको का अध्ययन करना था। शोध कार्य के निष्कर्ष में इन्होने पाया कि अधिकांश माता पिता बालिका शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण रखते है। साथ ही कुछ प्रशासनिक कठिनाइयाँ बालिका शिक्षा को प्रभावित करती है। बालिका शिक्षा में कमी का कारण बुनियादी सुविधाओं का अभाव पाया गया। उन्होंने सिफारिश की कि नए स्कूल खोले जाएँ और इन समस्याओं को दूर करने से पहले स्कूल भवन बुनियादी ढांचे का समर्थन, शिक्षकों की कमी दूर की जाए और गरीब छात्रों को वित्तीय सहायता दी जाए।

किम व चोई (2014) द्वारा नर्सिंग के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता, व्यवसायिक आत्म संकल्पना और आलोचनात्मक मनन प्रवृत्ति के मध्य संबंध" पर शोध किया गया। इस अध्ययन का लक्ष्य नर्सिंग के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता का विश्लेषण करना तथा अन्वेषण करना था कि विश्लेषणात्मक चिन्तन तथा व्यवसायिक आत्म संकल्पना, समस्या समाधान योग्यता को कैसे प्रभावित करते हैं। अध्ययन के लक्ष्य को प्राप्त करने हेतु निम्न उद्देश्य थे –1) नर्सिंग के विद्यार्थियों की समस्या समाधान योग्यता, व्यवसायिक आत्म संकल्पना व विश्लेषणात्मक चिन्तन का परीक्षण करना। 2) समस्या समाधान योग्यता, व्यवसायिक आत्म संकल्पना व विश्लेषणात्मक चिंतन में सम्बन्ध देखना। 3) समस्या समाधान योग्यता को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण करना। शोध कार्य हेतु चार विभिन्न नर्सिंग कालेज में पढ़ने वाले विद्यार्थियों, दो डिप्लोमा कोर्स के विद्यार्थी व दो स्नातक कोर्स के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया गया। न्यादर्श का चयन सुविधानुसार प्रतिचयन (convenience sampling) के

माध्यम से किया गया। चरों के मापन हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया–1) समस्या समाधान योग्यता – समस्या समाधान योग्यता का मापन 6 प्वांईट लिंकेट स्केल द्वारा किया गया, जिसमें 32 अनुवादित प्रश्नों का प्रयोग किया गया जो कि मूल रुप से हैप्नर व पीटरसन (1982) के उपकरण था। 2) व्यवसायिक आत्म संकल्पना – व्यवसायिक आत्म संकल्पना को मापने के लिए मूल रुप से आर्थर (1995) के उपकरण का प्रयोग किया गया। व्यवसायिक आत्म संकल्पना को मापने के लिए 4 प्वाईंट रेटिंग स्केल का प्रयोग किया गया। 3) विश्लेषणात्मक चिंतन प्रकृति – विश्लेषणात्मक चिंतन प्रकृति को मापने के लिए प्वाईंट लिकेट टाइप मापनी का प्रयोग किया गया। इसके मापन हेतु पाक्र (1990) का उपकरण प्रयोग किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि व्यवसायिक आत्म संकल्पना व विश्लेषणात्मक चिंतन प्रवृत्ति समस्या समाधान योग्यता को बढाने में सहायक हैं।

इरोजकन (2013) द्वारा सम्प्रेषण कौशल तथा अन्तर वैयक्तिक समस्या समाधान कौशल का सामाजिक आत्म प्रभावकारिता पर प्रभाव का अध्ययन किया। इस अध्ययन हेतु इन्होंने 494 व्यक्तियों (जिसमें 226 महिलाएं व 268 पुरुष) थे, का न्यादर्श के रुप में चयन किया, ये न्यादर्श टर्की के हाईस्कूल के छात्र–छात्राएं थे। इस अध्ययन का उद्देश्य सम्प्रेषण कौशल अन्तरवैयक्तिक समस्या समाधान कौशल व सामाजिक आत्म प्रभावकारिता के मध्य सम्बन्ध देखना था। इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिये आंकडे एकत्रित करने हेतु निम्न उपकरणों का प्रयोग किया गया – 1) सामाजिक आत्म प्रभावकारिता देखने के लिए बिलगिन (1999) द्वारा निर्मित सोशियल सेल्फ़ इफ़िकेसी

एम्सपैम्टेशन स्केल का उपयोग किया गया। 2) सम्प्रेषण कौशल को मापने हेतु (कम्यूनिकेशन स्किल इन्वेन्टरी) का प्रयोग किया गया था अन्तरवैयक्तिक।

वुस्टैनवर्ग व अन्य (2013) द्वारा जटिल समस्या समाधान और उसके निर्धारकों में अर्न्तराष्ट्रीय लिंग भेद पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन हेतु कुल 890 हाईस्कूल के विद्यार्थी (आठवीं से ग्याहरवीं कक्षा) तक शामिल किये गये। कुल 890 विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में चुना गया, जिसमें से 411 विद्यार्थी (जिसमें से 210 छात्र थे) जर्मनी के तीन विद्यालयों से लिये गये जबकि 479 विद्यार्थी जिसमें से 223 छात्र हंगरी के विद्यालयों से चुने गये, अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि समस्या समाधान पर अर्न्तराष्ट्रीय लिंग भेद का कोई प्रभाव नहीं पड़ता, इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि छात्रों ने छात्राओं से बेहतर प्रदर्शन किया तथा जर्मन विद्यार्थी ने हंगरी के विद्यार्थियों से बेहतर प्रदर्शन किया।

मैकेंज़ी, पामेला (2009) ने भारत की समृद्ध बहुभाषी भाषा पर एक अध्ययन किया। बहुसांस्कृतिक समाज सरकार के प्रयासों में अपने जनजातीय समुदायों की शैक्षिक आवश्यकताओं को संबोधित करने के लिए एक जटिल चुनौती पैदा करता है यद्यपि स्कूलों की पहुँच में वृद्धि हुई है और नामांकन दर में सुधार हो रहा है, लेकिन स्कूल छोड़ने की दर अभी भी हैं। इसका एक कारण यह है कि जिस शिक्षा पद्धति का संचालन किया जाता है आदिवासी समुदाय इसे एक अपरिचित सांस्कृतिक मानते हुए वे इस भाषा को नहीं समझते हैं। शोध यह प्रदर्शित करता है की जो शिक्षा मातृभाषा

में शुरू होती है उसी शिक्षा के माध्यम के छात्रों के सामने आने वाली भाषाई और सांस्कृतिक बाधाएँ कम हो जाती हैं भाषा की बाधा स्कूल वक्ताओं की शैक्षिक उपलब्धि बढ़ाने में एक प्रमुख घटक है इन चुनौतियों का समाधान करने के लिए भारत सर्कार ने कई राज्यों ने शिक्षा को विकसित करने और लागू करने का विकल्प चुना है कई कार्यक्रमों में स्थानीय भाषाओं, जनजातीय संदर्भ और पर्यावरण का उपयोग किया जाता है यह शोध इसमें प्रयुक्त प्रक्रियाओं की रूपरेखा प्रस्तुत करता है बहुभाषी शिक्षा कार्यक्रम की सफलता और स्थिरता के लिए चुनौतियों की जांच करता है।

सायडर (2008) ने आलोचनात्मक चिंतन शिक्षण तथा समस्या समाधान योग्यता पर शोध कार्य किया और इन्होनें पाया कि ताक्रिक चिंतन योग्यता को अभ्यास, निर्देश द्वारा बढ़ाया जा सकता है, इसके लिए आवश्यक है शिक्षक केवल व्याख्यान न दे बल्कि छात्रों को भी अधिगम प्रक्रिया में व्यस्त करें, मूल्यांकन विधियाँ इस प्रकार की हो जिससे पता चले कि उन्होनें कितना सीखा न कि कितना याद किया।

अमुथा जी विलियमस पेंनानाथम और डीबा, ए. (2007)ने व्यवसायों के बीच स्व–प्रेरक कौशल पर कार्य किया और यह देखा कि स्व–प्रेरणा पेशेवर को उच्च निष्पादन प्राप्त करने में मदद करती है। वर्तमान अध्ययन में कुछ चुने गये जनसांख्यिकी चरों के सम्बन्ध में पेशेवरों के स्व–प्रेरणाकौशल पर प्रयास किया गया। इस न्यादर्श में तमिलनाडु के कन्याकुमारी पिले के 100 प्रोफेशनल्स को लिया गया। यह देखा गया कि प्रोफेशनलन के स्व–प्रेरणा कौशल में उनके शैक्षिक योग्यता के सन्दर्भ में सार्थक अन्तर पाया गया। पोस्ट ग्रेजुएट में ज्यादा स्व प्रेरणा कौशल पाया जाता है। यहाँ पर पेशेवरों के स्व प्रेरणा

कौशल में उनके लिंग वैवाहिक स्थिति आयु अनुभव और रोजगार की प्रकृति के सन्दर्भ में कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया जाता है।

नेवा (2007) ने नेपाल के माध्यमिक विद्यालय के शिक्षकों के बीच कार्य संतुष्टि, मीडिया उपयोग और सूचना और संचार प्रोधौगिकी के उपयोग के प्रति दृष्टिकोण के संबंध में शिक्षक प्रभावशीलता का अध्ययन किया।अध्ययन के न्यादर्श में काठमांडू घाटी के 300 सरकारी और निजी विद्यालयों के शिक्षक शामिल थे। अध्ययन के परिणाम बताते है कि शिक्षक प्रभावशीलता कार्य संतुष्टि,मीडियो के उपयोग और सूचना और प्रौधोगिकी के प्रतिदृष्टिकोण से सकारात्मक संबंधित पायी गई। शिक्षक प्रभावशीलता के संबंध में विद्यालय के प्रकार और अकादमिक स्ट्रीम के शिक्षकों के बीच कोई सार्थक अन्तक्रिया नही पायी गई। अधिक प्रभावी शिक्षकों ने कार्य संतुष्टि, मीडियों उपयोग और सूचना एवं प्रौधोगिकी के प्रति दृष्टिकोण में अच्छा प्रदर्शन किया। माध्यमिक विद्यालय के विज्ञान, गणित, भाषा, सामाजिक विज्ञान के अधिक प्रभावी और कम प्रभावी शिक्षकों ने कार्य संतुष्टि, मीडियों के उपयोग और सूचना एवं प्रौधोगिकी के प्रति दृष्टिकोण के प्रति तुलनीय प्रदर्शन किया।

डगलस रूटलेज (2007) ने सैदान्तिक मॉडल और शिक्षक प्रभावशीलता के पूर्वानुमानों पर शोध की तुलना अन्य व्यावसायों के साथ की।कार्यकर्ता प्रभावशीलता के तीन विशिष्ट पूर्वानुमानों पर ध्यान केन्द्रिता किया –संज्ञानात्मक क्षमता, व्यक्तित्व और शिक्षा। शिक्षकों और अन्य कर्मचारियों के अध्ययन की तुलना विभिन्न तरीको से की जा सकती है जिसमें शिक्षक – प्रभावशीलता पर शोध मे सुधार और विस्तार किया जा सकता है,

पहला–कार्यकर्ता साहित्य विशिष्ट सैद्वान्तिक मॉडल दिखाता है जैसा कि कार्य संगठन फिट, जो शिक्षकों के कार्य संदर्भ में मौजुदा मॉडल का पूरक है। इस तरह से शिक्षण के लिए कार्यकर्ता मॉडल का विस्तार करने का संभावित मूल्य इस तथ्य से पुष्ट होता है कि उपर वर्णित तीन शिक्षक विशेषताएँशिक्षकों और अन्य कर्मचारियों के बीच समान तरीके से प्रभावशीलता की भविष्यवाणी करती है दूसरा–प्रभावशीलता के कई मॉडल को रेखांकित करके उन महत्वपूर्ण आयामों की पहचान करना सभंव है, जिन पर वे भिन्न होते है जैसे कि विश्लेषण की इकाई और सगठन के सबंध में व्यक्तिगत कार्यकर्ता की कल्पित भूमिका।तीसरा–अन्य कर्मचारियों पर शोध परिक्षण स्कोर के उपयोग से परे जाकर तीन पूर्वानुमानों और शिक्षक प्रभावशीलता के माप में सुधार करने के कुछ तरीकों पर प्रकाश डालता है।

डॉनली एवं मौरीन (2007)– प्रस्तुत शोध अध्ययन में अप्रवासी महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य देखभाल अनुभवों का संस्कृति पर प्रभाव का स्वास्थ्य देखभाल प्रदाताओं के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन किया गया। अध्ययन में मानसिक स्वास्थ्य देखभाल से सम्बन्धित सात प्रदाता संस्थाओं में कार्यरत अप्रावासी महिलाओं को सम्मिलित किया गया। शोध अध्ययन से ज्ञात हुआ कि अप्रवासी महिलाओं को इस क्षेत्र में सांस्कृतिक एवं सामाजिक असमानताओं का सामना करना पड़ता है। धार्मिक विश्वास उनके कार्यो को प्रभावित करते हैं। अप्रवासी महिलाओं प्रदान की गई मानसिक स्वास्थ्य सेवायें सेवा प्रदाता संस्था तथा प्राप्तकर्ता के मध्य सम्बन्ध को पूर्णतया प्रभावित करती हैं। सांस्कृतिक पृष्ठभूमि अप्रवासी महिलाओं के कार्य को सकारात्मक तथा नकारात्मक दोनों ही रूपों में प्रभावित

करती हैं। शोधकर्ता ने अप्रवासी महिलाओं को सांस्कृतिक एवं सामाजिक ज्ञान प्रदान करने के लिये विशेष बल दिया, जिससे उनके कार्य को बेहतर बनाया जा सके।

ली एवं हेलन (2007)– प्रस्तुत अध्ययन में आस्ट्रेलियाई नवयुवतियों के मानसिक स्वास्थ्य तथा जीवन संक्रमण का अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु राष्ट्रीय स्तर पर 7619 नवयुवतियों का न्यादर्श के रूप में चयनित कर आवासीय स्वतंत्रता, सम्बन्धों, शिक्षा एवं कार्य तथा मातृत्व से सम्बन्धित ऑकड़ें एकत्र किये गये। तीन वर्ष पश्चात उन्हीं महिलाओं के स्वास्थ्य सम्बन्धी जीवन के स्तर, आशावाद, अवसाद के लक्षण, जीवन संतुष्टि आदि के सन्दर्भ में जॉच की गई। अध्ययन के परिणामस्वरूप ज्ञात हुआ कि विवाह के उपरांत महिलाओं के मानसिक स्वास्थ्य में सकारात्मक बदलाव पाये गये। महिलाओं के वैवाहिक अलगाव तथा तलाक के मामलों में समय अंतराल के साथ कमी देखी गई। जीवन के इस चरण में महिलायें जीवन परिवर्तन का अच्छी तरह सामना कर पाती हैं, लेकिन कुछ महिलाओं में मनोवैज्ञानिक बदलावों में ऋणात्मक अंतर पाया गया। अध्ययन से यह भी परिलक्षित हुआ कि सामाजिक ताना बाना नवयुवतियों को जीवन के महत्वपूर्ण संक्रमण काल में जीवन से सम्बन्धित चुनाव करने में पर्याप्त समर्थन प्रदान नहीं करता है, जिससे महिलायें अवसाद ग्रस्त हो जाती हैं।

कोवॉस (2006) ने फ्रांस के विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य अैर शिक्षण स्तरका अध्ययन किया गया। इस सर्वेक्षण में 20–26 वर्ष के 3586 शिक्षकों को न्यादर्श के रूप में लिया गया। इस सर्वेक्षण में पाया गया कि विद्यार्थियों एवं शिक्षकों में सहयोग

पायागया और मानसिक स्वास्थ्य से संबंधित समस्याओं में देखा गया कि शाब्दिक यंत्रणा के कारण शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य पर प्रभाव पाया गया।

सुसलू (2006) ने प्राथमिक विद्यालयी शिक्षकों पर अध्ययन किया और निष्कर्ष निकाला कि प्रशासकों की अनुचित मांग, टीम की भावना का प्रोत्साहित करना, पुरस्कारों की उपेक्षा करना और वितीय समस्याएँ शिक्षकों के बीच डीमोटिवेशेन से सम्बन्धित कारक थे। शिक्षक अभिप्रेरणा और कार्य संतुष्टि में आन्तरिक अभिप्रेरणा को पूर्व कारक के रूप में पाया गया। आन्तरिक रूप से प्रेरित शिक्षक कम प्रेरित शिक्षकों की तुलना मे अत्यधिक संतुष्ट थे।

सालामी एवं एरिम (2006) दक्षिण पश्चिमी नाइजीरिया के विद्यालयी किशोरों की समस्या समाधान योग्यता व अध्ययन व्यवहार के मध्य संबंध पर अध्ययन किया गया। अध्ययन हेतु उच्च माध्यमिक स्तर के 430 विद्यार्थियों (215 छात्र व 215 छात्राएं) को स्तरीकृत यादृच्छिक प्रतिचयन विधि द्वारा न्यादर्श के रुप में लिया गया। इस अध्ययन का उद्देश्य माध्यमिक स्तर के विद्यालयी छात्रों में समस्या समाधान योग्यता व अध्ययन व्यवहार के मध्य संबंध की जांच करना था। इस अध्ययन हेतु हैपनर (188) द्वारा निर्मित समस्या समाधान इनवैनटरी व एकिंनबाय (1977) द्वारा निर्मित एडोलसेन्ट पर्सनल डाटा इन्वेन्टरी का उपकरण के रुप में प्रयोग किया गया। इन्होंने अपने अध्ययन में पाया कि समस्या समाधान योग्यता व अध्ययन व्यवहार के मध्य धनात्मक सम्बन्ध है तथा समस्या समाधान योग्यता, अध्ययन व्यवहार की भविष्यवाणी करने में सार्थक रुप से समर्थ है।

जानस्टोन (2006) द्वारा स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की (विश्लेषणात्मक चिंतन अभ्यास) द्वारा समस्या समाधान योग्यता के संवर्धन पर अध्ययन किया गया। इस अध्ययन में स्नातकोत्तर स्तर के विद्यार्थियों की विश्लेषणात्मक चिंतन कौशल (Critical thinking skill) का मूल्यांकन किया गया। इस शोध हेतु आस्ट्रेलिया के महाविद्यालय के स्नातकोत्तर स्तर के कोर्स वर्ग के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रुप में लिया गया। उपकरण के रुप में मेनसा स्टाइल परीक्षण का उपयोग किया गया। विश्लेषणात्मक चिंतन अभ्यास की प्रभावशीलता देखने हेतु पूर्व व पश्च परीक्षण किये गये। विद्यार्थियों को उपचार के रुप में विश्लेषणात्मक चिंतन अभ्यास कराये गये। विश्लेषणात्मक चिंतन को महाविद्यालयी शिक्षा के आवश्यक तत्व के रुप में लिया गया। अपने अध्ययन में इन्होंने पाया कि विश्लेषणात्मक चिंतन द्वारा समस्या समाधान योग्यता में सुधार होता है अर्थात् विश्लेषणात्मक चिंतन को बढ़ाकर समस्या समाधान योग्यता को सवंर्धित किया जा सकता है।

कांग एवं चंग (2006)– कांग व चेंग ने वीजिंग के ग्रामीण किशोर बालक–बालिकाओं के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया। न्यादर्श के रूप में 758 ग्रामीण किशोरों को यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित किया। प्रदत्तों के संकलन हेतु सोशियो इकोनोमिक स्टेटस इन्वेंटरी तथा मेंटल हेल्थ चेक लिस्ट का प्रयोग किया गया। ग्रामीण किशोरों के मानसिक स्वास्थ्य स्तर में लिंग के परिप्रेक्ष्य में कोई सार्थक अंतर नहीं पाया गया,

जबकि किशोर बालक–बालिकाओं के दैहिक स्वास्थ्य स्तर में सार्थक अंतर पाया गया। लड़कों का दैहिक स्वास्थ्य लड़कियों की अपेक्षा अधिक बेहतर रहा।

रॉटम एवं देसाई (2006)– प्रस्तुत शोध अध्ययन में बेघर तथा मातृ–मानसिक बीमारी से ग्रस्त बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया। अध्ययन में अमेरिका के यू एस आर्मड फोर्सेज आँथर्स एस्सैस्ड एसोशियेशन आँफ मेटरनल होमलैसनेस एण्ड क्लीनिकल स्टेट्स की 195 अनुभवी माताओं को न्यादर्श के रूप में लिया गया। संस्था बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य, विद्यालय पंजीकरण तथा विद्यालय में उनकी उपस्थिति के सन्दर्भ में अध्ययनरत है। निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि माताओं के मानसिक स्वास्थ्य का बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य पर सार्थक प्रभाव होता है। विद्यालयी वातावरण तथा घरेलू एकान्तता बच्चों के मानसिक स्वास्थ्य को पूणरूपेण प्रभावित करते हैं। माता से निजी सम्बन्ध तथा बच्चों की भावात्मक समस्याओं में सार्थक सहसम्बन्ध पाया गया। बच्चों के अच्छे मानसिक स्वास्थ्य के लिये आवश्यक है, कि परिवार में सभी से सहज सम्बन्ध हों।

सिक्लेयर कैथरीन डाऊसन, मार्टिन, थिस्टेलटन–मार्टिन जुडिथ (2006) ने सह शिक्षकों का एक प्रोफाइल विकसित किया जो छात्र शिक्षकों के साथ काम करने के लिए सहमत हुए और उन कारकों पर विचार–विमर्श किया जो उनकी महत्वपूर्ण भूमिका को प्राप्त करने को प्रोत्साहित करते है या रोकते है। परिणाम सुझाव देते है कि शिक्षकों की सकारात्मक प्रेरणा व्यावहारिक छात्रों के स्वयं विद्यार्थियों और व्यवसाय के प्रति व्यावसायिक प्रतिबद्धता के लिए चारों ओर घूमती है। यह अनुसंधान प्रेरित,

प्रतिबद्ध और सक्षम स्कूल आधारित सहयोगी शिक्षकों का एक समूह विकसित करने के लिए बहुत ही उपयोगी है जो कि भावी पीढी के शिक्षकों के साथ काम करेगे।

लिन एवं सेण्डीफर (2005) लिन एवं सेण्डीफर द्वारा अध्ययन पूर्ण कर चुके उन युवाओं के मानसिक स्वास्थ्य तथा शारीरिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया गया, जो रोजगार प्राप्त करने के लिये प्रयासरत थे। अध्ययन हेतु सर्वप्रथम 300 युवाओं के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य के ऑकडें एकत्र किये गये। छः माह पश्चात जिन युवाओं को रोजगार प्राप्त हो गया, उनके मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य से सम्बन्धित ऑकड़ें पुनः एकत्रित किये गये। बेरोजगार तथा रोजगार प्राप्त युवाओं के मानसिक तथा शारीरिक स्वास्थ्य ऑकड़ों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया। बेरोजगार युवाओं में तनाव व अवसाद रोजगार प्राप्त युवाओं से अधिक पाया गया। रोजगार प्राप्त युवाओं में नौकरी खोने का अधिक डर था, जबकि बेरोजगार युवा किसी भी तरह का कार्य करने को तत्पर पाये गये। मध्यम तथा निम्न स्तरीय परिवार के बेरोजगार युवाओं की तुलना में, उच्च स्तरीय परिवारों के बेरोजगार युवाओं को परिवार से अधिक प्रोत्साहन रोजगार प्राप्ति के लिये प्राप्त हुआ। रोजगार युवाओं की अपेक्षा बेरोजगार युवकों ने बीमार होने की दशा में आराम को अधिक महत्व प्रदान किया।

रिचर्ड (2005) ने माध्यमिक स्कूल के शिक्षकों पर कार्य अभिवृति की भविष्यवाणी के रूप में प्रेरक कारकों को खोजने के लिए एक अध्ययन किया। इसके लिए नाइजीरिया के 706 माध्यमिक शिक्षकों को चुना गया। अन्वेषक ने शिक्षकों के प्रेरक सूचकांकों

और कार्य अभिवृति के बीच सम्बन्धों का आकलन किया आर निष्कर्ष निकाला कि ये कॉलेज दोनों एक दूसरें से सम्बन्धित नहीं थे। शिक्षक प्रेरक सूचकांक कार्य अभिवृति के प्रति कोई पुर्वानुमान नहीं बताता।

आर्थिक प्रेरक कारक माध्यमिक विद्यालयी शिक्षकों से सम्बन्धित नहीं थे। गैर आर्थिक प्रेरक सूंचकाको और कार्य अभिवृति के बीच सार्थक सम्बन्ध पाया गया। अर्थात जब गैर आर्थिक प्रेरक सूंचकाक जैसे व्यक्तिगत और व्यावसायिक विकास, छात्र की शैक्षिक उपलब्धि में वृद्धि होने पर उच्च कार्य अभिवृति पायी जाती है।

जेबा (2005) प्रस्तुत अध्ययन में जिला विद्यालय प्रशिक्षण संस्थान के प्रशिक्षु अध्यापकों की शिक्षण सक्षमता तथा मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन के साथ शिक्षण सक्षमता तथा मानसिक स्वास्थ्य के मध्य सम्बन्ध जानने का प्रयास किया गया। अध्ययन हेतु वानारामुटि जिला विद्यालय प्रशिक्षण संस्थान, जनपद तुथुकुडी के 150 महिला तथा 150 पुरूष प्रशिक्षु अध्यापकों को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया। शोध उपकरण के रूप में अब्राहम व प्रसन्ना द्वारा निर्मित मेंटल हेल्थ स्टेटस स्केल तथा स्वनिर्मित टीचिंग काम्पीटेंसी असैसमेंट स्केल का प्रयोग किया गया। अध्ययन के निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि प्रशिक्षु अध्यापकों की शिक्षण सक्षमता तथा मानसिक स्वास्थ्य में मध्य सार्थक सहसम्बन्ध पाया जाता है।

राउल (2004) प्रस्तुत शोध में ऑटोनोमस तथा नॉन ऑटोनोमस कॉलेजों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन उनके मानसिक स्वास्थ्य के सम्बन्ध में किया गया। अध्ययन हेतु वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया। शोध अध्ययन उड़ीसा के 3 ऑटोनोमस तथा 3 नॉन ऑटोनोमस उच्च शिक्षण संस्थाओं, जिनकी संगठनात्मक संरचना लगभग समान थी, के शिक्षकों पर किया गया। प्रत्येक शिक्षण संस्थान के सात संकायों के सात शिक्षकों को यादृच्छिकी विधि द्वारा चयनित किया गया। अंतिम न्यादर्श के रूप में कुल 294 शिक्षकों को लिया गया, जिसमें 199 पुरूष तथा 95 महिला शिक्षक थे। शिक्षण प्रभावशीलता के प्रदत्तों के रूप में प्राप्त करने के लिये क्रास वैलीडेशन उद्देश्य की पूर्ति हेतु विद्यार्थियों का चयन विद्यालयी रेटिंग द्वारा किया गया। अन्ततः 21 स्नातक अंतिम वर्ष के विद्यार्थी यादृच्छिकी विधि द्वारा चयन किये गये। अध्ययन हेतु कुमार एवं मुथा द्वारा निर्मित शिक्षण प्रभावशीलता मापनी तथा जगदीश एवं श्रीवास्तव द्वारा निर्मित मेंटल हेल्थ इन्वेंटरी का प्रयोग किया गया। अध्ययन निष्कर्षों से ज्ञात हुआ कि ऑटोनोमस शिक्षण संस्थाओं के पुरूष एवं महिला शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता एवं मानसिक स्वास्थ्य नॉन ऑटोनोमस शिक्षण संस्थाओं के पुरूष तथा महिला शिक्षकों की तुलना में सार्थक रूप से अधिक उत्कृष्ट पायी गई।

फ्लेरोट एवं बेडलेगेज (2003) ने सबर्लन कम्यूनिटी (चीन) के 12 विद्यालयों के शिक्षकों के मानसिक स्वास्थ्य का अध्ययन किया। इसके लिए 12 प्रश्नों वाले गोलबर्ग स्वास्थ्य प्रश्नोत्तरी का प्रयोग किया गया। जिसमें 139 शिक्षकों पर इस प्रश्नोत्तरी के प्रयोग करने पर 120 शिक्षकों ने ही इनका उत्तर दिया, जिसमें 99 महिला एवं 21

पुरुष शिक्षक थे। जिसमें से 28 प्रतिशत शिक्षकों में संवेगात्मक अस्थिरता देखी गई। सामान्य जीवन से संबंधित समस्याऐं 32 प्रतिशत शिक्षकों में देखी गई जिसमें आपसी संबंध बच्चो से संबंधित समस्याऐं देखी गई। उम्र एवं कार्य अवधि ये दो कारको का मानसिक स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव देखा गया है।

कैसल (2003) ने वर्तमान राज्य मानकों और कौशल के साथ काम करने के लिए एक परिवर्तनकारी महत्वपूर्ण शिक्षाशास्त्र विकसित करने के लिए एक अध्ययन का प्रयास किया जिसकी शिक्षकों को वर्तमान में पढाने के लिए आवश्यकता है शिक्षकों की सहायता के लिए प्रायोगिक शिक्षण को विकसित करने जो कि प्रभावी शिक्षण और अध्यापन का हिस्सा है। एक मल्टीसेन सीरियल कम्पोनेट को तैयार किया गया। निष्कर्षों से पता चला कि एक कठोर शैक्षणिक कार्यक्रम के साथ एक महत्वपूर्ण सामाजिक रूप से निर्मित शिक्षण अधिगम वातावरण जो कि अन्तःक्रिया खोज और समस्या समाधान पर आधारित है,शिक्षक प्रभावशीलता में योगदान देता है और विद्यार्थी अधिगम प्रभावी था।

2.7 शोध अतंराल

अधिकांश शोध अध्ययन में विधार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य, व अन्य चरों से सम्बन्ध का अध्ययन किया गया है जबकि विधार्थियों की शैक्षिक स्थिति और शैक्षिक समस्याएं दोनों के साथ बहुत कम शोध हुए।

अधिकांश शोध में यह अध्ययन नहीं किया गया कि शैक्षिक स्थिति और शैक्षिक समस्याएं से कैसे सम्बन्धित है।अधिकांश शोधों में शोध कार्य में समूहों में तुलना की गई है जबकि चरों में परस्पर तुलना नहीं की गई है।

2.8 उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय में शोध कार्य से सम्बन्धित शोध साहित्य के अध्ययन का सक्षेपण प्रस्तुत किया गया है। जिसके अन्तर्गत सम्बन्धित अध्ययनों के उद्देश्य, प्रक्रिया एवं उनके निष्कर्षों स्थान दिया गया है। इस कार्य से शोधार्थी को जो शोध रिक्तियाँ प्राप्त हुई है उन्हे आधार बनाकर चयनित शोध समस्या के चयन को उचित एवं प्रासगिंक सिद्ध किया जा सका है। सम्बन्धित साहित्य के अध्ययन से शोधार्थी को उपकरण, न्यादर्श चयन, आकड़ों का सग्रहण तथा आकड़ों की व्याख्या और विश्लेषण हेतु मार्गदर्शन प्राप्त हुआ है।